11. इयन और मेरी विक्टोरिया प्रपात देखने गए

जून का महीना आया, इयन और मेरी दौड़ते हुये घर पहुंचे, कूदते, हंसते, खिलखिलाते। वे दोनों हाथ ऊपर उठा कर मां को बता रहे थे कि वे परीक्षा में पास हो गये हैं। मां ने वायदा किया था कि यदि इयन और मेरी परीक्षा में पास हो गये तो उन्हें विक्टोरिया प्रपात और उसके पास का अभयारण्य दिखाने छुट्टी में ले जाएंगी। इयन और मेरी इंगलैंड के एक स्कूल में पढ़ते हैं। उन्हें बहुत उत्सुकता थी यह जानने की कि विक्टोरिया प्रपात कहां है? वहां कैसे पहुंचेंगे? वहां मौसम कैसा होगा?

विक्टोरिया प्रपात अफ्रीका के ज़िम्बाबवे देश में स्थित एक बहुत प्रसिद्ध जल प्रपात है। यहां ज़ेम्बज़ी नाम की नदी लगभग 360 फुट ऊंचाई से नीचे बहुत गहरी घाटी में गिरती है। घाटी में गिरते हुये ज़ेम्बज़ी नदी प्रपात या झरना बनाती है। इसी को विक्टोरिया प्रपात कहते हैं। अभयारण्य उन जंगलों को कहते हैं जहां जंगली जानवरों को कोई मार नहीं सकता है।

वे इंगलैंड से चलकर पहले दक्षिण अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप पर उतरेंगे। केप ऑफ गुड होप पर केप टाउन नाम का शहर बसा है। वहां से वे ट्रेन से विक्टोरिया प्रपात तक जायेंगे जो ज़िम्बाबवे देश में है। इयन और मेरी ने अपनी कॉपी में केप ऑफ गुड होप से विक्टोरिया प्रपात तक का मार्ग भी खींच लिया।

इयन और मेरी इंगलैंड से अफ्रीका जहाज़ से जाने वाले हैं, बताओ वे किस महासागर से जायेंगे।

मानचित्र - 1 में क्या तुम यह मार्ग उंगली फेरकर बता सकते हो?

इयन तथा मेरी ज़िम्बाबवे के बारे में पढ़ने लगे। उसमें से कुछ जानकारी तुम्हें भी दी गई है। शायद तुममें से कोई इयन और मेरी की तरह ज़िम्बाबवे जाए।

अफ्रीका का दक्षिणी भाग

मेरी ग्लोब ले आई और दक्षिण अफ्रीका और ज़िम्बाबवे देशों को खोजने लगी। तुम भी अपनी कक्षा में ग्लोब लाकर देखो, ये देश कहां पर हैं। वह कहने लगी, "इयन यह देखो, यह देश तो भूमध्य रेखा के दक्षिण में है!" इयन बोला, "तो क्या हुआ?" मेरी बोली, "अरे तुम्हें पता नहीं, जब भूमध्य रेखा के उत्तर में गर्मी का मौसम

मानचित्र 1 इंगलैंड से ज़िम्बाबवे

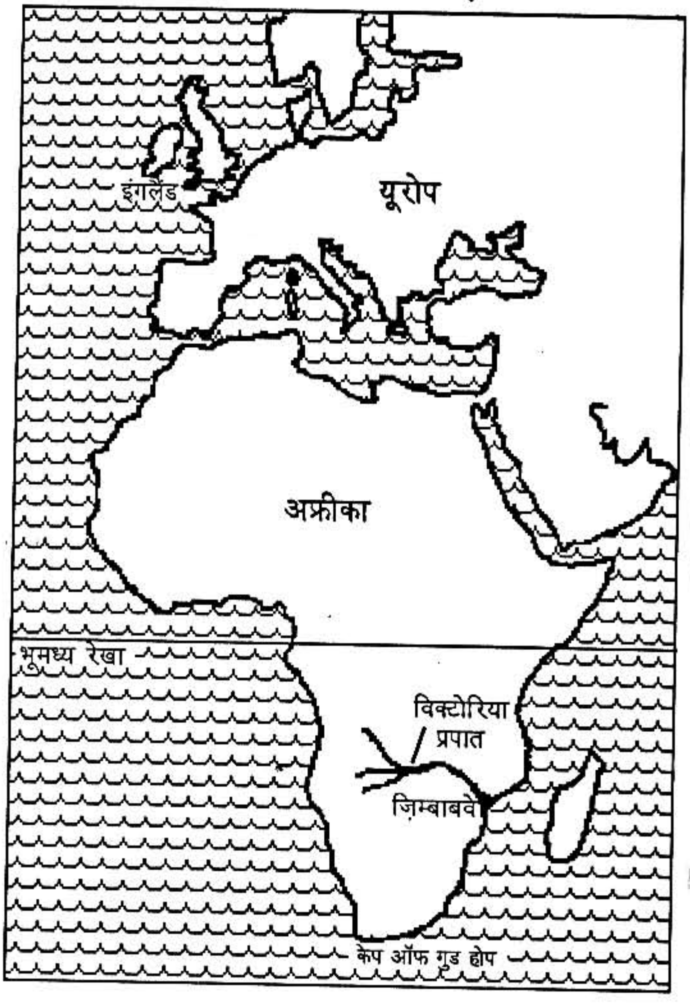

होता है तो उसके दक्षिण मे ठंड का मौसम होता है! यानी अब जून के महीने में ज़िम्बाबवे में ठंड का मौसम होगा।"

अफ्रीका का दक्षिणी भाग भूमध्य रेखा के दक्षिण में है यानी वह दक्षिणी गोलार्द्ध में है। भारत, इंगलैंड जैसे देश भूमध्य रेखा के उत्तर में हैं इसलिए ये उत्तरी गोलार्द्ध के देश हुए। तुम तो जानते हो कि भूमध्य रेखा के उत्तर या दक्षिण की तरफ जाने पर ठंड बढ़ती जाएगी। अब तुम एक और मज़ेदार बात जानो। दोनों गोलार्द्धो में विपरीत ऋतुएं होती हैं। यानी, जब उत्तरी गोलार्द्ध (जैसे, भारत) में गर्मी का मौसम होता है तो दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों में ठंड का मौसम होता है।

यहां अफ्रीका के तीन देशों के नाम दिए गए हैं। तुम उनको पृष्ठ 71 पर दिए गए मानचित्र में देखो और इस तालिका को भरो।

देश	*किस गोलार्द्ध में है*	*जून मे वहां क्या मौसम होगा*
अलजीरिया		
नामीबिया		
बोत्स्वाना		

जिम्बाबवे देश

अफ्रीका के दक्षिणी भाग में एक छोटा सा देश है ज़िम्बाबवे। पुराने मानचित्रों में यह देश दक्षिणी रोडेशिया के नाम से मिलेगा। इसी के उत्तर में ज़ाम्बिया देश है जो पहले उत्तरी रोडेशिया नाम से जाना जाता था। रोडेशिया तो अंग्रेज़ी नाम है, तो अफ्रीका में यह नाम कैसे? आओ इसके बारे में पता करें।

सेसिल रोड्स

लगभग सौ साल पहले यहां ज़ुलू कबीले का राज्य था। सन् 1889 में सेसिल रोड्स नाम के अंग्रेज़ ने ज़िम्बाबवे में खनिज निकालने और वहां अंग्रेज़ों को बसाने के लिए एक कंपनी बनाई। रोड्स ने लगभग 200 अंग्रेज़ों को यहां ख़निजों की खोज में भेजा, जो यहां बस गए। फिर 1895 तक आते-आते इन विदेशियों ने यहां ब्रिटेन का राज्य बना लिया और इस पूरे इलाके को रोड्स के नाम पर रोडेशिया नाम दिया। यहां हज़ारों अंग्रेज़ और अन्य यूरोपियन देश के लोग ज़ुलू लोगों को खदेड़कर बस गए।

यहां के निवासियों के साथ अंग्रेज़ों की कई लड़ाईयां हुईं। बहुत लोग मारे गए। लेकिन अंत में अंग्रेज़ राज्य करने लगे। यहां के लोग स्वतंत्रता के लिये बराबर लड़ते रहे और अन्त में 1980 में रोडेशिया को स्वतंत्रता मिली तब उसका नाम ज़िम्बाबवे रखा गया।

इयन और मेरी ज़िम्बाबवे पहुंचे

केप टाउन से ट्रेन से सफर करके इयन और मेरी दक्षिणी अफ्रीका और बोत्स्वाना देश होते हुए ज़िम्बाबवे के नगर बुलावेयो पहुंच गए। उन्होंने एटलस निकाला। ज़िम्बाबवे का मानचित्र देखकर वे यह जानना चाहते थे कि वे कहां पर हैं। तुम भी मानचित्र 2 देखो और बुलावेयो नगर ढूंढो।

"अरे! यह क्या, यहां तो सर्दी है", इयन बोला। मेरी बोली, "ब्रिटेन में तो गर्मी का मौसम है, यहां सर्दी का मौसम कैसे?" तब उन्हें याद आया कि वे तो भूमध्य रेखा पार करके पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्द्ध में आ गए। वे लोग हंसने लगे कि देखो, हमें इतनी बात याद नहीं रही कि पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में जब गर्मी का मौसम होता है तब भूमध्य रेखा के दक्षिण की पूरी दुनिया में जाड़े का मौसम होता है। वे लोग जुलाई में ज़िम्बाबवे पहुंचे थे। वहां मई से अगस्त तक जाड़े का मौसम होता है। मेरी बोली, "तब तो यहां गर्मी का मौसम नवंबर से मार्च तक होता होगा जब हमारे यहां जाड़ा होता है।"

ऊंचा और नीचा पठार

ट्रेन अब बुलावेयो से चलकर विक्टोरिया प्रपात की ओर बढ़ चली। इयन तथा मेरी ने अपनी किताब निकाल

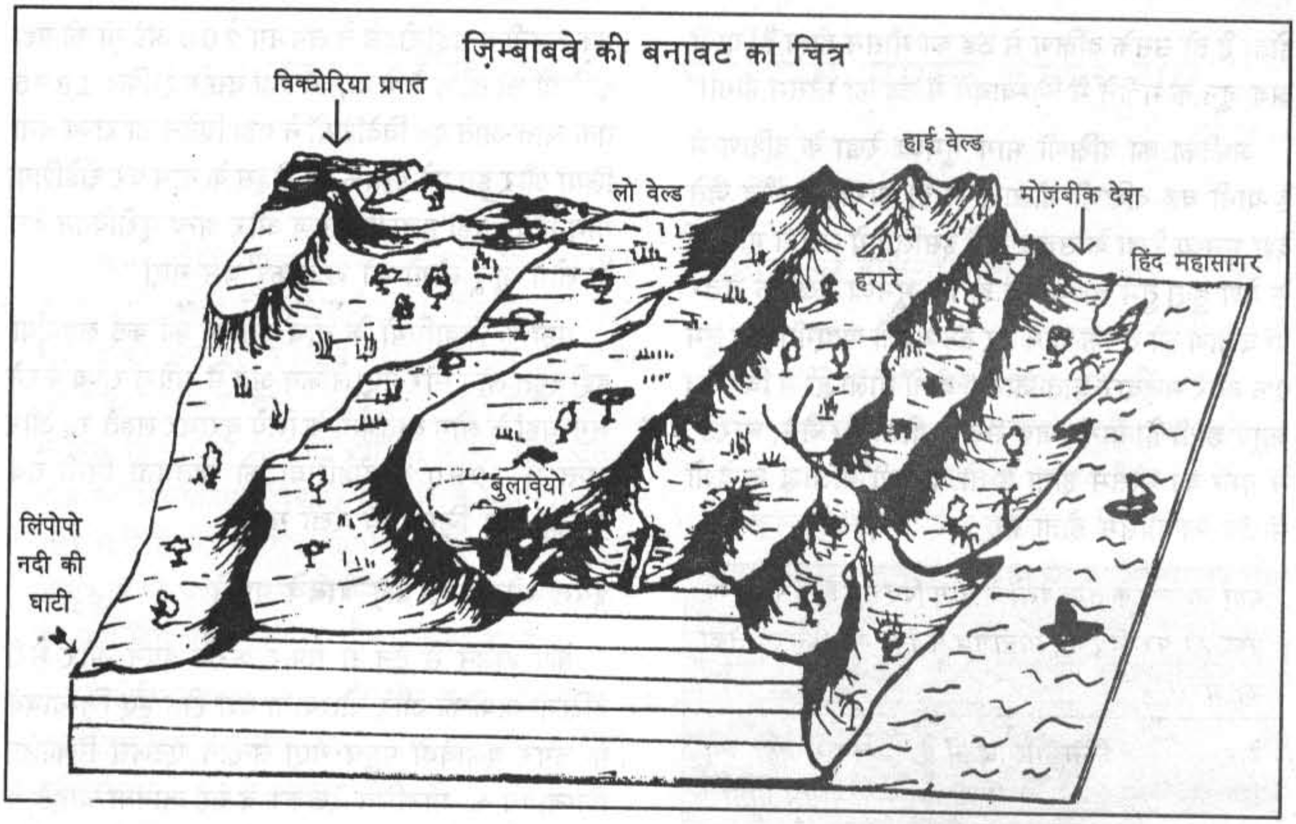

कर ज़िम्बाबवे के बारे में कुछ और पढ़ा। ऊपर के चित्र को ध्यान से देखो। पूरा ज़िम्बाबवे एक पठार पर है। कुछ हिस्सा ऊंचा पठार है और कुछ हिस्सा निचला। ज़िम्बाबवे में ऊंचे भाग को हाई वेल्ड कहा जाता है। इसी भाग में बुलावेयो तथा हरारे शहर बसे हैं। उत्तर में ज़ेम्बज़ी नदी की घाटी है और दक्षिण में लिम्पोपो नदी की घाटी है। नदियों की घाटियों और चारों ओर का भाग नीचा पठार या लो वेल्ड कहलाता है।

ज़िम्बाबवे का सवाना प्रदेश

इयन और मेरी ने देखा कि ज़िम्बाबवे में घास के लम्बे चौड़े प्रदेश हैं। बुलावेयो के आसपास घास हरी और मुलायम है। ट्रेन से पालतू जानवर जैसे गाय-भेड़ आदि चरते दिखाई दे रहे थे। बीच-बीच में खेतिहर प्रदेश हैं। उन्होंने देखा कि घास के बीच-बीच में कुछ बड़े मोटे तने के पेड़ हैं। उन्हें याद आया कि अफ्रीका के सवाना प्रदेश में बाओबाब नामक पेड़ होता है जिसके तने का घेरा 30 फीट तक देखा गया है। इसको खोखला करके लोग घर भी बना लेते हैं। तुम भी इसका चित्र देखो। इसे अपने यहां विदेशी या खुरासानी इमली कहते हैं।

चित्र-1 बाओबाब पेड़

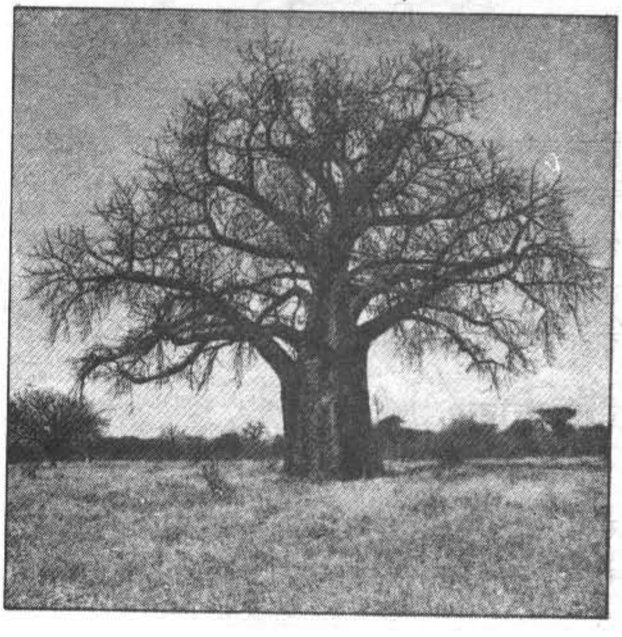

चित्र-2 विक्टोरिया प्रपात

फिर उनकी ट्रेन उत्तर पश्चिम में विक्टोरिया प्रपात की ओर बढ़ने लगी, उस दिशा में उतार था। वहां ज़ेम्बज़ी नदी के निकट जंगल बढ़ने लगे। हरियाली भी अधिक हो गई। घास ऊंची तो थी लेकिन कड़ी सी। मेरी बोली, "अच्छा, तो अब हम लोग लो वेल्ड में उतर आए। हमने पढ़ा था कि यहां ऐसी ही कड़ी घास के प्रदेश हैं। लेकिन यहां पालतू जानवर क्यों नहीं दिख रहे हैं?"

इयन और मेरी के पिता ने बताया कि यहां लो वेल्ड में सेट्सी नामक ज़हरीले कीटाणुओं वाली एक मक्खी होती है, जिसके काटने से आदमी क्या जानवर तक मर जाते हैं। इसलिए पालतू जानवर अब हाई वेल्ड पर ही पाले जाते हैं। वहां इस मक्खी का प्रकोप कम होता है।

विक्टोरिया प्रपात

अंत में वह दिन आ ही गया जब इयन और मेरी ने विक्टोरिया प्रपात देखा। ज़ेम्बज़ी नदी शोर मचाती, उछलती-कूदती और ज़ोर से बहुत ऊंचे कगार से बहुत नीचे गिर रही है, तेज़ फुहार उठ रही है। नदी बहुत चौड़ी है, और गिरती भी ऊंचाई से है। तुम भी विक्टोरिया प्रपात का चित्र देखो। फुहारें तो इतनी उठती हैं कि चारों ओर का प्रदेश भीग जाता है। उस पर जब सूरज की किरणें पड़ती हैं तो इन्द्रधनुष बन जाते हैं। तुमने आकाश में इन्द्रधनुष देखा होगा। पर शायद नदी की फुहार पर नहीं। इयन और मेरी का मन होता वहीं बैठे देखते रहें लेकिन तब तक उन्हें वन्य पशुओं को दिखाने के लिए जीप आगई।

खुछ दूर चलने पर उन्हें एक बड़ा जलाशय दिखा। यहां ज़ेम्बज़ी नदी पर बांध बना कर इसे रोका गया है। इसे करीबा बांध कहते हैं। इस बांध से पानी जब ज़ोर से गिरता है तो नीचे बिजली घर में बिजली बनती है। यह बिजली ज़िम्बाबवे तथा ज़ाम्बिया दोनों के काम में आती है।

अभयारण्य में वन्य पशु

कुछ दूर चले ही थे कि मेरी चिल्लाई, "देखो, ऊंची गर्दन वाला जिराफ, पूरा झुण्ड-का-झुण्ड पेड़ों की ऊपरी

जिराफ

फुनगी तक पत्ते खा रहा है। क्या लम्बी गर्दन है, खुद भी तो 14-18 फीट ऊंचा होता है। इनके बच्चों को तो देखो, अपनी मां के पैरों के बीच खड़े हो जाते हैं।" तब तक उनकी जीप एक खुले स्थान पर पहुंच गई। वहां एक पेड़ के नीचे सिंह, सिंहनी और उनके बच्चे एक हिरन को मारकर खा रहे थे। वे लोग एकदम सहम गए और ड्राइवर ने भी जल्दी से जीप आगे बढ़ाई। तब तक उन्हें एक छोटे तालाब के पास कुछ दिखा। "अरे यह काली-सफेद धारीदार घोड़े जैसा कौन जानवर है?" इयन बोला, "तुम भूल गई? यह ज़ीब्रा है। देखो! पेड़ के बीच और कई ज़ीब्रा चर रहे हैं।"

चित्र-4 इंपाला हिरण

इतने में हिरनों का एक झुण्ड जीप के सामने से दौड़ता हुआ निकल गया। ड्राइवर बोला, "लगता है पास में कहीं सिंह आराम कर रहे हैं तभी ये हिरन भागे।" मेरी बोली, "देखो, इनके सींग कैसे ऐंठे हुए हैं।" उनके पिता ने बताया कि यहां कई किस्म के हिरन पाए जाते हैं। सिंह हिरनों का पीछा करके पकड़ लेता है, फिर खाता है, यही इसका भोजन है। मेरी बोली, "तो फिर हिरन क्या खाता है ?" उनके पिता ने बताया कि सवाना प्रदेश के हिरन, ज़ीब्रा, जिराफ जैसे बहुत से जानवर यहां की घास, पत्ती आदि पर जीवित रहते हैं और सिंह, चीते, तेंदुए, सियार, लोमड़ी आदि इन पशुओं को अपना आहार बनाते हैं।

पास ही एक पहाड़ी पर जीप पहुंच गई। नीचे दूर तक घास का प्रदेश दिख रहा था। बीच में जानवरों की पूरी बारात दिख रही थी। जीप के ड्राइवर ने बताया, "ये जंगली भैंसे पास के किसी अन्य प्रदेश को जा रहे हैं।" और तब तक ऊंची घास में से हाथी का झुण्ड निकल आया। अरे, इतने सारे हाथी! वे सब तालाब में जाकर पानी पीते, सूंड से फुहार छोड़ते और अपने शरीर पर पानी डालते, व आवाज़ करते।

हमारे देश के हाथी और वहां के हाथी के बीच क्या कुछ फर्क दिखता है?

"शाम होने को आई, अब यहां रहना सुरक्षित नहीं है।" यह कह कर मेरी के पिता ने जीप वापिस करवा ली। अभयारण्य देखने के बाद वे लोग लौटने लगे। अब उन्हें ज़िम्बाबवे की राजधानी, हरारे जाना था। वे लो-वेल्ड छोड़कर हाई वेल्ड (ऊंचे पठार) पर चढ़ने लगे।

चित्र-5 हिप्पोपोटमस

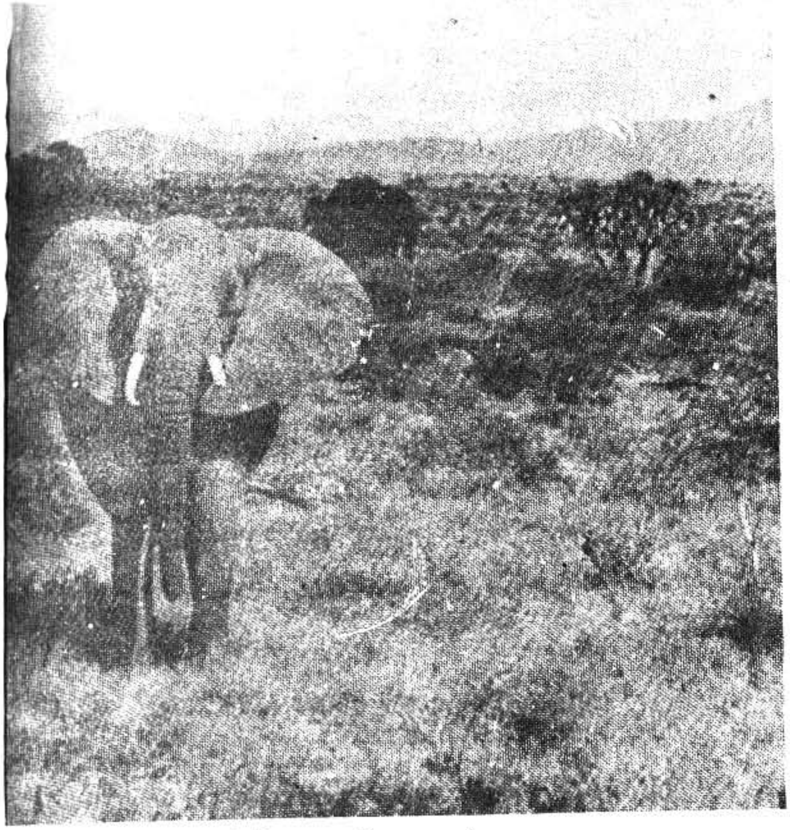

चित्र-6 अफ्रीकी सवाना प्रदेश का हाथी

चित्र-7 गेंडा

चित्र-8 शेर का परिवार

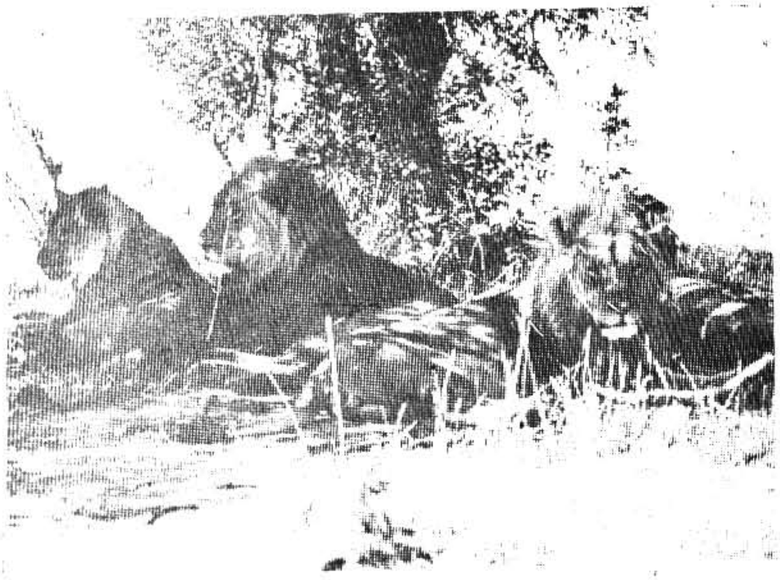

चित्र-9 एक ज़ेब्रा अपने नवजात बच्चे के साथ

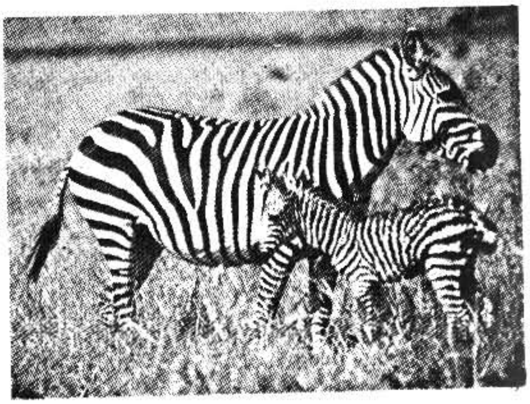

चित्र-10 मक्के के खेत में काम करतीं बंटू महिलाएं

हाई वेल्ड पर पशुपालन

ज़िम्बाबवे के हाई वेल्ड या घास के ऊंचे पठार पर मक्खी का प्रकोप नहीं है और ठंडी जलवायु के कारण घास भी मुलायम और रसीली होती है, तो यहां अब पशुपालन विकसित हो गया है। यहां की बहुत सी भूमि चारागाह की तरह उपयोग में आती है।

अंग्रेज़ों के आने से पहले ज़िम्बाबवे के निवासी कुछ पालतू जानवर रखते थे, जैसे बकरी और भेड़। पर तब पशुपालन एक बड़ा धंधा नहीं था, जैसा अंग्रेज़ों ने ज़िम्बाबवे में बसने के बाद पशुपालने का धंधा विकसित किया। अब अधिकतर पशु मांस के लिए पाले जाते हैं: गाय, बैल, सुअर आदि। मांस को सुरक्षित रखने के लिए नगरों में शीत गृह (ठंडे कमरे) बनाए गए हैं। गाय यहां दूध के लिए भी पाली जाती है। दूध से मक्खन और पनीर बनाने के कारखाने भी स्थापित किए गए हैं।

अपने यहां के पशुपालन और ज़िम्बाबवे के पशुपालन में तुम्हें क्या अंतर दिखे?

चित्र 11 को ध्यान से देखकर उसका वर्णन करो।

खेती और मुख्य फसलें

ज़िम्बाबवे के लोगों का मुख्य धंधा खेती है। यहां के निवासी बंटू कबीले के हैं। वे हल, बैल से खेती नहीं करते थे। वे हंसिये से वनस्पति काट कर एक जगह इकट्ठा कर जला देते, फिर कुदाल से गड्ढे करके बीज बो देते। इस तरह बहुत भूमि में खेती तो नहीं हो सकती। एक परिवार कुछ एकड़ भूमि में अनाज पैदा कर लेता है। वे मुख्यतः मक्का, बाजरा, मूंगफली, सोयाबीन और कंद उगाते हैं।

चित्र-11 एक अंग्रेज़ का फार्म

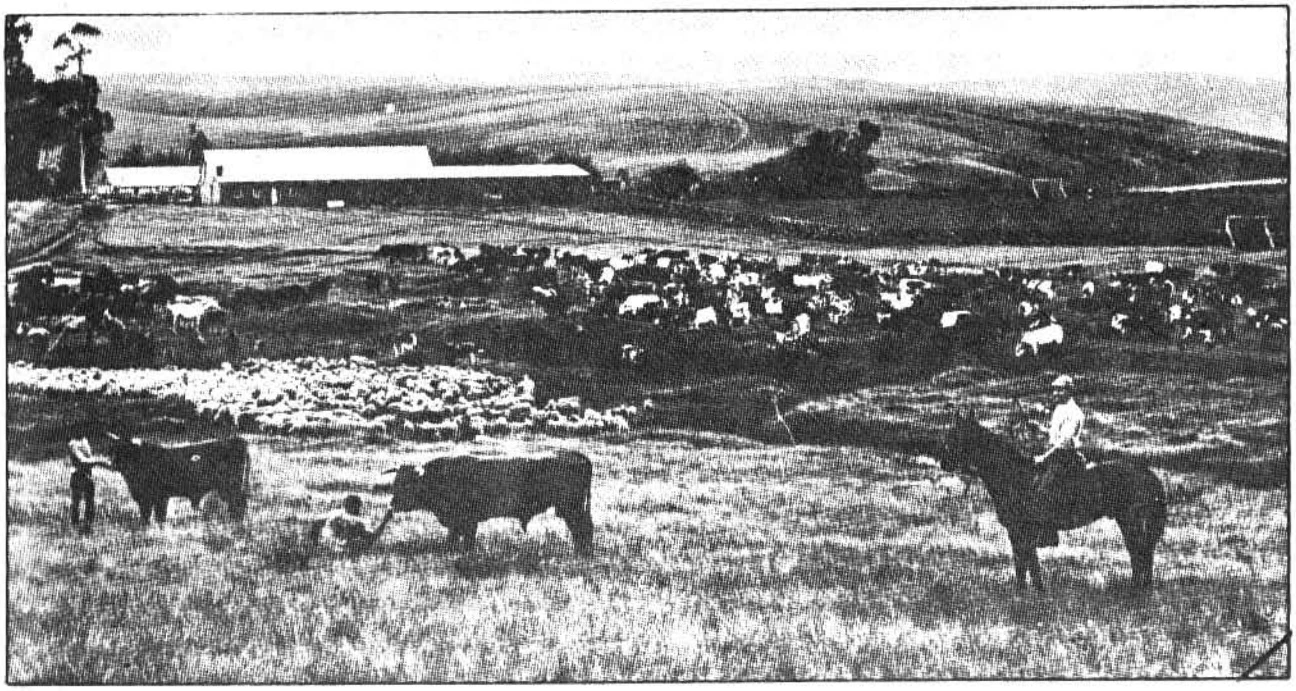

जब हाई वेल्ड में अंग्रेज़ बसने लगे तो उन्होंने भूमि खरीदी और ट्रैक्टर आदि की सहायता से कृषि भूमि का विस्तार किया। नई भूमि जोत कर उसे कृषि योग्य बनाया। रसायनिक खाद और अच्छे बीज भी लाए। अंग्रेज़ों की जोत भी बड़ी-बड़ी थीं। इस तरह मक्का और गेहूं अधिक मात्रा में होने लगा। सोयाबीन और सूरजमुखी बोया जाने लगा। सब्जियां और फल, विशेषकर संतरा, नीबू आदि भी होने लगे। फिर पश्चिम के कम वर्षा वाले प्रदेशों में कपास भी उगाई जाने लगी।

धीरे-धीरे किसानों ने पाया कि ज़िम्बाबवे की जलवायु तम्बाकू की खेती के लिए उपयुक्त है। फिर तो तम्बाकू की खूब खेती होने लगी। ज़िम्बाबवे से बाहर भेजी जाने वाली चीज़ों में तम्बाकू बहुत महत्वपूर्ण है। ज़िम्बाबवे के स्वतंत्र होने के बाद भी यह मुख्यतः ब्रिटेन को भेजी जाती है।

यहां बसे अंग्रेज़ों के फार्मों में खेतिहर मज़दूर स्थानीय बंटू लोग हैं, जो जीविका के लिए अपनी खेतिहर भूमि छोड़ कर इन फार्मों में काम करने आ जाते हैं। बंटू लोगों की स्त्रियों को घर के कामकाज के अलावा अपने छोटे-छोटे खेतों को भी देखना पड़ता है। कम समय दे पाने के कारण उनके खेतों में अधिक उत्पादन नहीं हो पाता था।

1980 में स्वतंत्र होने के बाद सरकार ने छोटे किसानों को तकनीकी सहायता, उर्वरक, ऋण आदि दिया जिससे इन किसानों का उत्पादन बढ़ा है। अब वहां की सरकार स्त्रियों को भी खेती की तकनीकी शिक्षा, ऋण आदि की सुविधा दे रही है। आजकल दुनिया के बाज़ार में ज़िम्बाबवे के खेती के उत्पादनों की मांग कम हो रही है। इसलिए कई अंग्रेज़ अपने फार्म बेचकर दूसरे काम करने लगे हैं।

चित्र-10 को ध्यान से देखकर बताओ इन खेतों में काम कर रही महिलाओं को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा।

बंटू पुरुष अंग्रेज़ों के खेतों में क्यों काम करने जाते होंगे?

खनिज उत्खनन उद्योग

परिवहन मार्ग

इयन और मेरी घूमघाम कर हरारे पहुंचे। हरारे के आसपास के कुछ प्रदेश भी वे देखना चाहते थे। तभी शाम को उनके एक दूर के रिश्तेदार टामस मिलने आए। वे बहुत साल पहले ब्रिटेन से ज़िम्बाबवे में आकर बस गए थे। उन्होंने बताया कि वे एक उत्खनन कंपनी में काम करते हैं जो हरारे से कुछ दूर रेल मार्ग पर है। टामस ने बताया कि जब यहां रेल लाईन बिछी तभी यहां खनिज उत्खनन उद्योग विकसित हो सका।

मेरी बोली, "ऐसा क्यों?" टामस बोले, "खनिज बहुत ही भारी होते हैं। अक्सर उनका उपयोग खदान से काफी दूर पर किया जाता है। उन्हें एक जगह से दूसरी जगह लाने ले जाने के लिए रेल मार्ग ज़रूरी है। ज़िम्बाबवे में इसीलिए अधिकतर खदानें रेलमार्ग और सड़कों के निकट हैं।"

उत्खनन उद्योग कहां लगता है?

उत्खनन उद्योग लगाने के लिए पहले खोजकर पता करते हैं कि भारी मात्रा में कहां खनिज हैं। कोई कंपनी सरकार से खनिज वाली भूमि का पट्टा ले लेती है, फिर मशीनें लाती है, मज़दूरों को इकट्ठा करती है और उत्खनन उद्योग शुरू होता है। वहां से फिर रेलमार्ग द्वारा किसी उपयुक्त स्थान पर खनिज ले जाकर साफ किया जाता है। वहां फिर उसकी तरह-तरह की चीज़ें बनती हैं। ज़िम्बाबवे में ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका की कंपनियों ने खनिज वाली भूमि लेकर उत्खनन उद्योग लगाए।

इन खदानों में अधिकतर स्थानीय लोग मज़दूरों की तरह काम करते हैं। ये मज़दूर खदानों के चारों ओर बस जाते हैं। वहां बस्तियां बस जाती हैं। लेकिन यदि वहां खनिज खत्म हो जाये या घाटा होने पर खदान बंद कर दी जाये तो लोग फिर दूसरी जगह काम करने चले जायेंगे।

एक जगह निकाला गया खनिज वहीं तो उपयोग में नहीं आता, दूर-दूर तक भेजा जाता है। ज़िम्बाबवे के अधिकतर खनिज विदेशों को ही भेजे जाते हैं। खनिज समुद्री बंदरगाहों तक रेल से पहुंचता है।

रेल लाइनें किन बंदरगाहों तक जाती हैं?

ज़िम्बाबवे के खनिज

मानचित्र 2 में देखो ज़िम्बाबवे में कहां पर कौन से खनिज निकाले जाते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका के समान ज़िम्बाबवे में हीरा और बहुत अधिक सोना तो नहीं मिलता लेकिन सोने की कुछ खदानें अवश्य हैं। सोना तो यहां बहुत पुराने समय से निकाला जाता है लेकिन कोयला, तांबा, निकल, लोहा, क्रोम तथा एस्बेस्टस आदि खनिजों की खोज अंग्रेज़ों ने यहां बसने के बाद की और उत्खनन शुरू किया।

ज़िम्बाबवे के नगर

अंग्रेज़ों के आने के बाद यहां धीरे-धीरे कई नगर बस गए, जिनमें हरारे (पुराना नाम सेलिस्बरी), उम्ताली तथा बुलावेयो प्रमुख हैं।

मानचित्र में इन नगरों की स्थिति देखो। क्या ये नगर रेलमार्ग से जुड़े हैं?

तुमने कभी सोचा बड़े नगर क्यों बस जाते हैं? सभी लोग गांवों में क्यों नहीं रहते?

कभी किसी नगर को घूम कर देखो तो तुम वहां के कार्यों को समझ सकोगे। कॉलेज, अस्पताल, सरकारी ऑफिस आदि का तो यह केंद्र होता ही है। चारों ओर के प्रदेश का कृषि उत्पादन भी नगरों की मंडियों में आता है और जहां भी इन चीज़ों का बाज़ार हो, देश या विदेश में, भेजा जाता है। हरारे नगर इसी प्रकार का प्रादेशिक

मानचित्र 2 ज़िम्बाबवे में खनिज तथा रेल मार्ग

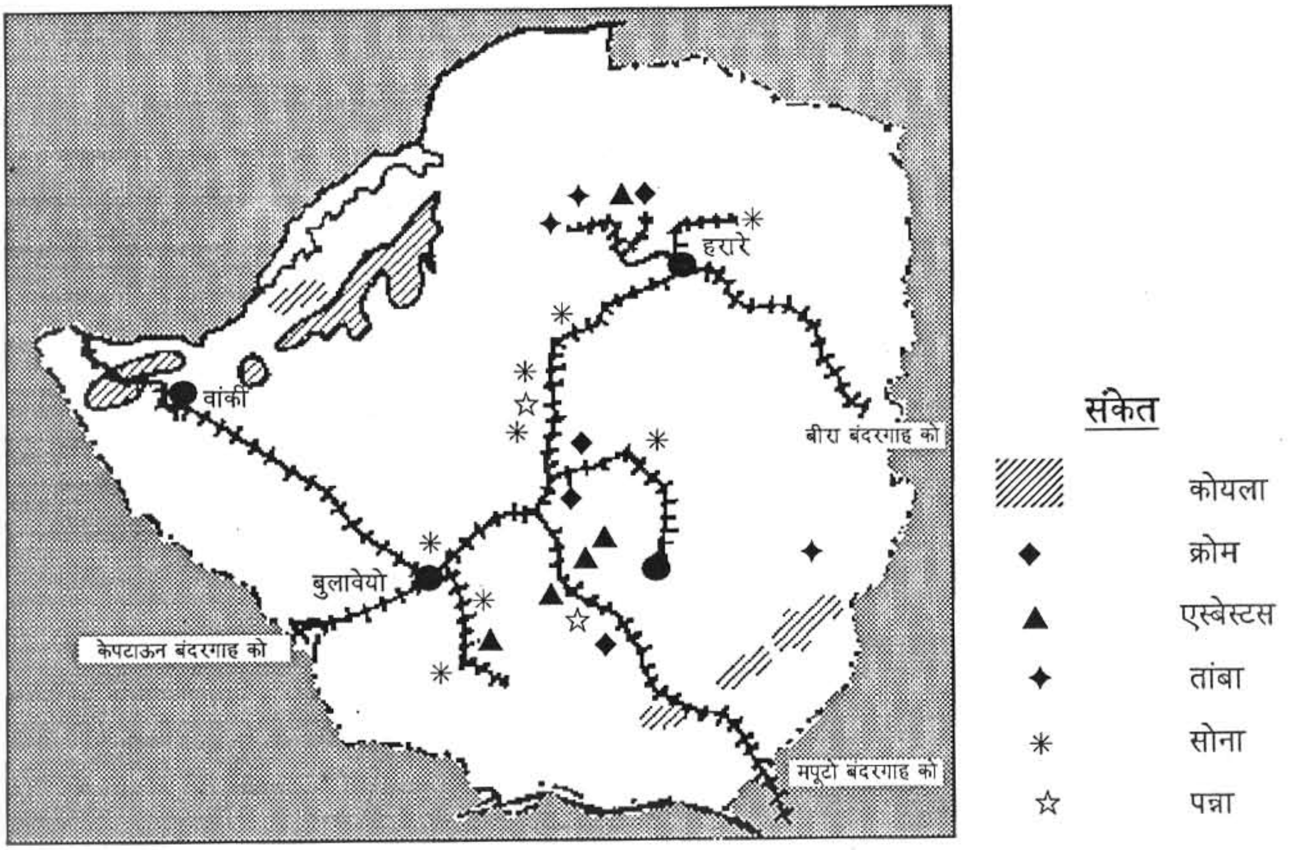

केंद्र है। यहां तम्बाकू, मक्का, मूंगफली तथा कपास बिकने के लिए आती है।

खेती और पशुपालन से मिली बहुत सी चीज़ें जैसे मांस, फल जल्दी खराब भी हो जाती हैं। तो नगरों में उनको डिब्बों में बंद करके सुरक्षित किया जाता है। कृषि उत्पादन से जुड़े कुछ उद्योग भी नगरों में होते हैं, जैसे आटा पीसना, बिस्कुट बनाना, तेल निकालना, तम्बाकू की पत्ती से खाने की तम्बाकू बनाना, सिगरेट बनाना। हरारे में ये सब उद्योग लग गए हैं।

बताओ हरारे में निम्नलिखित उद्योगों के लिए चारों ओर के कृषि प्रदेश से क्या कच्चा माल मिलता है?

उद्योग	*कच्चा माल*
मांस डिब्बों में बंद करना	
आटा पीसना	
बिस्कुट बनाना	
तेल निकालना	
तम्बाकू, सिगरेट बनाना	
चमड़े का सामान बनाना	

हरारे में एक दिन इयन और मेरी घूम रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक जगह तम्बाकू की पत्ती के बोरे रखे हैं और उसे बेचने के लिए बोली लगाई जा रही है। पास खड़े एक व्यक्ति से उन्होंने पूछा कि क्या इतनी तम्बाकू ज़िम्बाबवे में ही इस्तेमाल होती है? उसने कहा, "नहीं। अधिकतर तो विदेश भेज दी जाती है। उसने फिर शान से कहा, "अब तो हमारा देश अफ्रीकी, यूरोपियन और अमरीकी देशों को बहुत सी चीज़ें भेजता है। और अपनी ज़रूरत की चीज़ें मंगाता है।"

नीचे दी गई तालिका को भरो और बताओ कि आयात में कृषि से मिली चीज़ें अधिक हैं, कि खदान से निकाली चीज़ें, कि कारखानों में बनी चीज़ें?
और फिर निर्यात में ....

ज़िम्बाबवे में धीरे-धीरे कारखाने लग रहे हैं और ज़रूरत की चीजें बनना शुरू हो गई हैं जैसे लोहा, इस्पात, कपड़ा आदि। तब यह देश दूसरे देशों के कारखानों पर निर्भर नहीं रहेगा।

इयन और मेरी की छुट्टियां खत्म हो रही थीं, उनके पिता को अपने काम पर पहुंचना था। उन्होंने हवाई जहाज़ पकड़ा और अपने देश ब्रिटेन उड़ चले।

निर्यात की जाने वाली चीज़ें	कहां से मिली			आयात की जाने वाली चीज़ें	कहां से मिली		
	कृषि	खदान	कारखाना		कृषि	खदान	कारखाना
तम्बाकू	✓			मशीन			✓
कपास				रेल के डिब्बे			
मक्का				ट्रक, मोटर			
शक्कर				खनिज तेल			
मांस				कपड़ा			
तांबा				रसायन			
सोना				इस्पात			
क्रोम				कीटनाशक दवाएं			
सिले हुए कपड़े				दवाएं			
निकल							
बिजली का सामान							

खनिजों का उपयोग

1. तांबा- तांबे से न केवल बर्तन बनते हैं बल्कि बिजली के तार में भी इसका उपयोग होता है। तांबे में टिन या रांगा मिलाकर कांसा बनाया जाता है। पीतल के बर्तन तो तुमने घरों में देखे होंगे। कभी सोचा कि पीतल कैसे बनता है? तांबे में टिन, क्रोम, जस्ता आदि मिलाकर पीतल बनाया जाता है।

2. क्रोम- स्टील के रंग की सफेद सी धातु होती है। तुमने घरों में स्टील के बर्तन देखे होंगे, जिनमें ज़ंग नहीं लगता, धब्बे भी नहीं पड़ते। यह स्टील क्रोम और लोहे को मिलाकर बनाते हैं। साइकिल के चमकते हुए हैन्डिल इसी धातु की पॉलिश से बनते हैं। ज़िम्बाबवे क्रोम धातु का महत्वपूर्ण उत्पादक देश है।

3. एस्बेस्टस राख के रंग का रेशेदार खनिज होता है। एस्बेस्टस मिला कर जो सीमेंट बनता है, उससे चादरें और पाईप बनाए जाते हैं। तुमने सफेद सी चादरों से छत बनाते हुए देखा होगा।

अभ्यास के प्रश्न

1. पृष्ठ 71 का मानचित्र देखकर बताओ ज़िम्बाबवे के चारों ओर कौन से देश हैं?
2. अंग्रेज़ लोगों ने ज़िम्बाबवे का क्या नाम रखा था? उसे अपने राज्य में क्यों मिलाया?
3. लो वेल्ड में पशुपालन में क्या कठिनाई है? वहां कैसे जानवर अधिक हैं?
4. हाई वेल्ड में पशुपालन की क्या सुविधाएं हैं?
5. अब वन्य पशुओं को अभयारण्य में क्यों रखा गया है?
6. अंग्रेज़ों ने ज़िम्बाबवे में खेती किन विधियों की सहायता से फैलाई ?
7. ज़िम्बाबवे में कौन सी मुख्य फसलें होती हैं, निम्नलिखित में से चुनो:
   चावल, सोयाबीन, गेहूं, मक्का, पटसन, मूंगफली, तम्बाकू, कपास।
8. ज़िम्बाबवे में बसे बंटू लोगों और अंग्रेज़ों की खेती में क्या अंतर है, चार वाक्यों में बताओ।
9. खनिजों को निकालने का उद्योग लगाने के लिए परिवहन मार्गों की आवश्यकता क्यों होती है?
10. उत्खनन उद्योग के क्षेत्र में लोग क्यों बस जाते हैं? क्या वे हमेशा वहीं रहते हैं?
11. तांबा और क्रोम धातुएं किन कामों में आती हैं? ज़िम्बाबवे इन्हें बाहर क्यों भेजता है?
12. ज़िम्बाबवे कृषि और उत्खनन से प्राप्त खनिज विदेशों को अधिक भेजता है और कारखाने से बनी चीज़ें मंगाता है, ऐसा क्यों है?